Indian Journal of Social Sciences and Literature Studies
Vol. 11, Issue 2, October 2025
ISSN 2349-5634 (Print) ISSN 2455-0973 (online)

अनामिका की रचनाओं में नारी की स्थिति: विश्लेषणात्मक अध्ययन एवं प्रासंगिकता

मीनाक्षी[1] और धर्मेश कुमार मीणा[2]

शोधार्थी[1] हिंदी विभाग, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाले विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान-333001.

सहायक प्राध्यापक[2] हिंदी विभाग, श्री जगदीश प्रसाद झाबरमल टिबरेवाले विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान-333001.

सारांश

अनामिका समकालीन हिंदी साहित्य की सर्वाधिक चर्चित, बहुमुखी और प्रतिभासंपन्न कवयित्री हैं, जिनकी रचनाएँ स्त्री-अनुभव को एक नवीन आलोचनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत करती हैं। उनकी कविताओं में नारी की स्थिति का जो चित्रण मिलता है, वह परंपरागत स्त्री-छवि को न केवल चुनौती देता है, बल्कि एक सशक्त, स्वतंत्र और आत्मचेतन नारी का नया प्रतिमान भी स्थापित करता है। प्रस्तुत शोध-पत्र इस प्रश्न का अन्वेषण करता है, कि आज के बदलते सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य में अनामिका की कविताएँ नारी की स्थिति और उसकी प्रासंगिकता को किस रूप में उद्घाटित करती हैं। यह अध्ययन नारीवाद थ्योरी, स्त्री विमर्श, लोक-संस्कृति और मिथकीय आलोचना के सम्मिलित दृष्टिकोणों से अनामिका के काव्य संसार का विश्लेषण करता है। शोध में यह पाया गया है कि अनामिका की कविताओं में घरेलू स्त्री, खेतिहर स्त्री, शोषित स्त्री, माँ, पत्नी, प्रेमिका और विद्रोहिणी सभी रूप एक साथ उपस्थित हैं। वे लोक जीवन की थाती को भाषिक प्रतीकों और शिल्पगत नवाचार के माध्यम से नारी मुक्ति का वाहन बनाती हैं। पितृसत्तात्मक संरचनाओं का प्रतिरोध करते हुए अनामिका की कविता मिथकीय स्त्री पात्रों का पुनर्पाठ प्रस्तुत करती है। समकालीन भारतीय समाज में जहाँ स्त्री के विरुद्ध हिंसा, असमानता और सांस्कृतिक दमन की समस्याएँ अभी भी विद्यमान हैं, वहाँ अनामिका की कविताएँ एक साहित्यिक प्रतिरोध का काम करती हैं। यह शोध पत्र प्रस्तुत करता है कि अनामिका की कविताएँ आज के दौर में भी उतनी ही प्रासंगिक और जरूरी हैं।

प्रमुख शब्द: अनामिका, नारी विमर्श, अस्मिता, पितृसत्ता, लोक संस्कृति, समकालीन हिंदी कविता, प्रतिरोध।

प्रस्तावना

भारतीय साहित्य में स्त्री का प्रश्न सदैव केंद्रीय रहा है। वेदकालीन गार्गी और मैत्रेयी से लेकर आधुनिक युग की महादेवी वर्मा, कृष्णा सोबती, मैत्रेयी पुष्पा और अनामिका तक स्त्री लेखन ने एक लंबी यात्रा तय की है। परंपरागत समाज में स्त्री की दैहिक संरचना को ही उसकी सामाजिक स्थिति का निर्धारक तत्व माना जाता रहा। उसे ममतामयी, करुणामयी, बलिदानी बताकर उसकी स्वाभाविक प्रकृति और आकांक्षाओं को दबाया गया। महादेवी वर्मा ने 'शृंखला की कड़ियाँ' में इसी स्थिति का गहरा विश्लेषण किया था, जहाँ उन्होंने स्त्री के लिए समानता और अस्तित्व के अधिकार की माँग की थी (वर्मा, 2001)।

समकालीन हिंदी कविता में अनामिका (जन्म: 1961) एक ऐसी कवयित्री के रूप में उभरी हैं जिन्होंने स्त्री के अनुभव को उसकी समग्रता में सुख और दुख, विद्रोह और स्वीकृति, प्रेम और पीड़ा सभी रूपों में व्यक्त किया है। उनकी कविता 'खुरदरी हथेलियाँ', 'टोकरी में दिगंत: थेरीगाथा' (2014), 'दूब धान', 'बीजाक्षर' जैसे संग्रहों में फैली है और इस विशाल काव्य संसार में नारी की स्थिति बहुआयामी रूप में प्रकट होती है।

सिमोन द बोउवार ने अपनी ऐतिहासिक कृति 'द सेकंड सेक्स' (1949) में कहा था कि 'स्त्री पैदा नहीं होती, बल्कि बनाई जाती है'। अनामिका की कविताएँ इसी तथ्य की सृजनात्मक पुष्टि करती हैं वे समाज द्वारा निर्मित 'स्त्रीपन' के खोल को तोड़कर एक स्वतंत्र, जीवंत और संघर्षशील स्त्री की छवि गढ़ती हैं।

शोध का उद्देश्य

प्रस्तुत शोध पत्र के निम्नलिखित मूल उद्देश्य हैं: प्रथम, अनामिका की कविताओं में नारी की स्थिति का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना। द्वितीय, समकालीन भारतीय समाज में स्त्री की वास्तविक दशा के साथ अनामिका के काव्य चित्रण की तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करना। तृतीय, अनामिका की कविताओं में विद्यमान नारीवाद थ्योरी, स्त्री विमर्श और लोक संस्कृति के तत्वों को रेखांकित करना। चतुर्थ, पितृसत्तात्मक संरचनाओं के प्रति अनामिका की काव्यात्मक

प्रतिक्रिया और प्रतिरोध के स्वरूप का विवेचन करना। पंचम, मिथकीय और घरेलू स्त्री पात्रों के नवीन पुनर्पाठ का अध्ययन करना तथा षष्ठ, भाषा, प्रतीक और शिल्प के स्तर पर अनामिका की काव्य रचना प्रक्रिया का मूल्यांकन करना।

इस शोध का केंद्रीय प्रश्न यह है: अनामिका की कविताओं में नारी की स्थिति और प्रासंगिकता किस रूप में प्रकट होती है और यह आज के दौर के सामाजिक संदर्भों से किस प्रकार संबद्ध है? इस केंद्रीय प्रश्न के इर्द-गिर्द कुछ उप-प्रश्न भी उभरते हैं: क्या अनामिका की कविताएँ परंपरागत स्त्री छवि को चुनौती देती हैं? किन प्रतीकों, बिंबों और शिल्प-युक्तियों के माध्यम से अनामिका स्त्री अनुभव को व्यक्त करती हैं? लोक जीवन और लोक संस्कृति का उनके स्त्री विमर्श में क्या योगदान है? मिथकीय स्त्री पात्रों का पुनर्पाठ उनकी कविता में किस तरह होता है? और क्या अनामिका की कविता “मी टू” युग के बाद और भी प्रासंगिक हो गई है?

शोध पद्धति यह शोध मुख्यतः गुणात्मकऔर व्याख्यात्मक पद्धति पर आधारित है। शोध में प्राथमिक स्रोत के रूप में अनामिका के प्रकाशित काव्य, संग्रहों 'बीजाक्षर' (1997), 'खुरदरी हथेलियाँ' (2006), 'दूब धान' (2008), 'टोकरी में दिगंत: थेरीगाथा' (2014), 'पानी को सब याद था' (2018) आदि का विश्लेषण किया गया है। द्वितीयक स्रोतों में हिंदी और अंग्रेजी की समीक्षात्मक कृतियाँ, शोध पत्र, पत्र पत्रिकाएँ तथा स्त्रीवादी थ्योरी पर आधारित ग्रंथ सम्मिलित हैं। शोध में पाठ-विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन और स्त्रीवादी साहित्यालोचन की पद्धतियों का समवेत उपयोग किया गया है। सिमोन द बोउवार (1949), जूडिथ बटलर (1990), एलेन शोवाल्टर (1977) जैसी पाश्चात्य नारीवादी विद्वानों के सैद्धांतिक आधार के साथ साथ महादेवी वर्मा (1942), प्रभा खेतान (1994), मैत्रेयी पुष्पा (1996) और रोहिणी अग्रवाल (2014) जैसी भारतीय स्त्री विमर्श की आलोचकों के दृष्टिकोण को भी इस शोध में समाहित किया गया है।

साहित्य समीक्षा

अनामिका पर अब तक हुए शोध कार्य मुख्यतः तीन धाराओं में बाँटा हैं। पहली धारा उनकी भाषा और शिल्प के वैशिष्ट्य पर केंद्रित है, दूसरी उनके स्त्रीविमर्श के वैचारिक स्वरूप की

पड़ताल करती है और तीसरी उनकी कविताओं में लोक संस्कृति और मिथकीय तत्वों की उपस्थिति पर प्रकाश डालती है। नामवर सिंह ने अनामिका की कविता की स्त्री दृष्टि को 'एक नया रचाव' कहा और उनकी भाषा की लोक सजलता की प्रशंसा की (सिंह, 2002)। रोहिणी अग्रवाल ने 'साहित्य की जमीन और स्त्री मन के उच्छ्वास' (2014) में अनामिका के काव्य में स्त्री की आंतरिक शक्ति और सौंदर्यबोध का विस्तृत अध्ययन किया है। मृणाल पांडे ने अपनी कृति 'परिधि पर स्त्री' (2011) में समकालीन नारी लेखन के संदर्भ में अनामिका को एक अग्रणी स्वर माना है। के.एम. मालती (2012) ने 'स्त्री विमर्श–भारतीय परिप्रेक्ष्य' में अनामिका की कविताओं को भारतीय नारीवाद की समृद्ध परंपरा से जोड़ा है। अभयकुमार दुबे (2014) ने दलित और स्त्री विमर्श के अंतःसंबंधों पर प्रकाश डालते हुए अनामिका की प्रासंगिकता को रेखांकित किया है। सुधा सिंह (2017) ने अनामिका की 'थेरीगाथा' को बौद्ध स्त्री आख्यान की पुनःप्रस्तुति के रूप में देखा है और इसे आज के युग की थेरियों की आवाज कहा है। पाश्चात्य साहित्यालोचन में सुनेजा गिन्यू (1994) का फेमिनिस्ट नॉलेज और गिल्बर्ट सांड्रा तथा सुसान गूबर की ' दी मिटाउन इन दी एटिक ' (1979) की अंतर्दृष्टियाँ अनामिका के काव्य को समझने में सहायक हैं। विशेषतः शोवाल्टेर (1977) का ' गायनोक्रिटिसिजम ' का सिद्धांत जो स्त्री लेखन को उसकी अपनी परंपरा और मानकों से देखने का आग्रह करता है, अनामिका की कविता पर अत्यंत सटीक लागू होता है।

अनामिका का साहित्यिक परिचय

अनामिका का पूरा नाम श्रीमती अनामिका है। उनका जन्म 17 अगस्त 1961 को मुजफ्फरपुर, बिहार में हुआ। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की और वर्तमान में दिल्ली विश्वविद्यालय के सत्यवती कॉलेज में अंग्रेजी की प्राध्यापिका हैं। वे कवयित्री, कथाकार, आलोचक और अनुवादक चारों विधाओं में समान अधिकार से लिखती हैं।

अनामिका के प्रमुख काव्य संग्रह हैं: 'गलत पते की चिट्ठी' (1995), 'बीजाक्षर' (1997), 'खुरदरी हथेलियाँ' (2006), 'दूब धान' (2008), 'टोकरी में दिगंत: थेरीगाथा' (2014), 'पानी को सब याद था' (2018)। उपन्यासों में 'दस द्वारे का पिंजरा' (2003) और 'तिनका तिनके पास' (2006) चर्चित हैं। उनकी आलोचनात्मक कृतियों में 'स्त्रीत्व का मानचित्र' उल्लेखनीय है। उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है, जिनमें साहित्य अकादेमी पुरस्कार (2023) सर्वप्रमुख है।

अनामिका की काव्य दृष्टि का विकास तीन चरणों में देखा जा सकता है। प्रथम चरण में व्यक्तिगत स्त्री अनुभव, प्रेम और पीड़ा की अभिव्यक्ति प्रमुख है। द्वितीय चरण में उनकी दृष्टि का विस्तार होता है, वे समाज, इतिहास और लोक जीवन की स्त्री को काव्य का केंद्र बनाती हैं। तृतीय चरण में बौद्ध थेरीगाथा के पुनर्पाठ के माध्यम से वे स्त्री मुक्ति का एक अखिल सांस्कृतिक और आध्यात्मिक आयाम खोलती हैं। प्रभा खेतान ने कहा था कि 'नारीवाद न मार्क्सवाद है और न पूँजीवाद। स्त्री हर जगह है, हर वाद में है' (हंस, 1996) अनामिका की कविता इसी सर्वव्यापी स्त्री चेतना का साहित्यिक प्रमाण है।

अनामिका की कविताओं में नारी की स्थिति

अनामिका की कविताओं में नारी की स्थिति बहुपर्तीय, बहुरंगी और बहुस्वरीय है। वे स्त्री को किसी एक सीमित परिभाषा में नहीं बाँधतीं बल्कि उसके अनेक रूपों को एक साथ प्रस्तुत करती हैं। उनकी कविता 'सबसे खतरनाक होता है सपनों का मर जाना' की तर्ज पर कही जाए तो अनामिका के लिए सबसे खतरनाक वह स्थिति है जब स्त्री खुद अपनी सत्ता को नकारने लगे। उनकी प्रसिद्ध कविता 'टोकरी में दिगंत' में एक साधारण गृहिणी के विशाल आत्मिक ब्रह्मांड को उजागर किया गया है। जब एक स्त्री अपनी टोकरी उठाकर दिगंत की ओर बढ़ती है, तो यह केवल शारीरिक यात्रा नहीं, बल्कि आत्मिक विस्तार की यात्रा भी है। अनामिका की कविता में स्त्री घरेलू काम करते हुए भी ब्रह्मांडीय चेतना से जुड़ी रहती है।

'खुरदरी हथेलियाँ' संग्रह में मजदूर स्त्री की हथेलियों का बिंब स्त्री के श्रम, उसके शोषण और उसके अदम्य संघर्ष का एक साथ प्रतीक बन जाता है। ये खुरदरी हथेलियाँ सौंदर्य विमर्श की पितृसत्तात्मक परिभाषाओं को चुनौती देती हैं और यह स्थापित करती हैं कि श्रम करने वाली स्त्री का सौंदर्य उसकी कोमलता में नहीं, उसकी दृढ़ता में है। मैत्रेयी पुष्पा के शब्दों में कहें तो 'नारी की यथार्थ स्थिति के बारे में चर्चा करना ही स्त्री विमर्श है' (हंस, 1996) और अनामिका यही काम अपनी कविताओं में करती हैं।

समकालीन समाज में नारी की प्रासंगिकता

समकालीन भारतीय समाज में स्त्री की स्थिति का विरोधाभास अत्यंत तीखा है। एक ओर कार्पोरेट जगत में महिला सीईओ हैं, राजनीति में महिला मुख्यमंत्री और मंत्री हैं, अंतरिक्ष में भारतीय महिला यात्री पहुँच चुकी हैं–तो दूसरी ओर नेशनल क्राइम रिकॉर्ड ब्यूरो (2022) के आँकड़ों के अनुसार देश में हर दिन बलात्कार, दहेज हत्या और घरेलू हिंसा की सैकड़ों घटनाएँ दर्ज होती हैं। नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे (2019-21) के अनुसार भारत में 18 वर्ष से कम आयु में विवाहित महिलाओं का प्रतिशत अभी भी चिंताजनक स्तर पर है।

अनामिका की कविताएँ इस विरोधाभास को पहचानती हैं और उसे काव्यात्मक रूप देती हैं। उनकी कविता 'मातृत्व' में एक स्त्री की प्रसव पीड़ा को उसकी शक्ति और सृजनशीलता के प्रतीक के रूप में चित्रित किया गया है, यह समाज की उस धारणा को तोड़ती है जो प्रसव को केवल जैविक क्रिया मानती है। रामधारी सिंह दिनकर ने कहा था कि 'पुरुष अपने अहं के वशीभूत ही स्त्री के वास्तविक स्वरूप से अनभिज्ञ रहा है' (मधुमती, 2016) अनामिका की कविता इसी अज्ञानता के परदे को उठाती है। मी टू आंदोलन (2017-18) के बाद जब यौन उत्पीड़न और सत्ता के दुरुपयोग का प्रश्न वैश्विक विमर्श में आया, तब अनामिका की कविताएँ जो इन मुद्दों को बहुत पहले से उठाती रही थीं और भी प्रासंगिक हो गईं। उनकी कविता 'चौदह बरस की दो सेक्स वर्कर्स' किशोरी यौन शोषण की पीड़ा को जिस संवेदनशीलता और क्रोध के साथ व्यक्त करती है, वह आज के युग में और भी मार्मिक लगती है।

लोक-जीवन और स्त्री-अनुभव

अनामिका की काव्य की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता उसका लोक और संस्कृति से गहरा संबंध है। वे घर, रसोई, आँगन, खेत, नदी, पेड़ पौधे, पशु पक्षी, इन सभी को काव्यिक प्रतीक बनाती हैं, और उनके माध्यम से स्त्री के अंतर्जगत को उजागर करती हैं। हज़ारी प्रसाद द्विवेदी ने कहा था कि भारतीय साहित्य की जड़ें लोक जीवन में हैं (द्विवेदी, 1952) अनामिका की कविता इसी परंपरा को नारीवादी दृष्टि से समृद्ध करती है।

'दूब धान' संग्रह में दूब घास का बिंब अत्यंत महत्वपूर्ण है। दूब जैसे रौंदे जाने पर भी फिर-फिर उगती है, वैसे ही स्त्री पितृसत्तात्मक दमन के बावजूद अपनी जिजीविषा नहीं खोती। 'धान' की फसल स्त्री के पोषण धर्म का प्रतीक है, वह जन्म देती है, पालती है और मानव-सभ्यता का आधार बनती है। अनामिका लिखती हैं: 'धान के पौधों में / कितनी माँएँ हैं / जो चुपचाप पकती रहती हैं।' यह पंक्तियाँ स्त्री के अदृश्य श्रम और उसकी अनकही कहानी को सामने लाती हैं।

लोक गीतों, कहावतों और व्रत कथाओं की भाषा अनामिका की कविता में इस तरह घुली मिली है कि वह एक विशेष ऐंद्रिक अनुभव उत्पन्न करती है। 'गलत पते की चिट्ठी' में विवाह के बाद स्त्री के विस्थापन की पीड़ा को लोक लय में व्यक्त किया गया है, जब एक लड़की 'गलत पते' पर यानी ससुराल में आ जाती है और माँ का घर 'सही पता' बन जाता है, तो यह लोक-परंपरा की वह व्यथा है जिसे कोई भी विवाहित स्त्री झुठला नहीं सकती।

पितृसत्ता, स्त्री-अस्मिता और प्रतिरोध

अनामिका की कविताओं में पितृसत्तात्मक संरचनाओं का प्रतिरोध सीधे टकराव के रूप में नहीं, बल्कि एक सूक्ष्म, व्यंग्यात्मक और रचनात्मक विद्रोह के रूप में प्रकट होता है। महादेवी वर्मा ने 'शृंखला की कड़ियाँ' में लिखा था कि 'युगों के अनवरत प्रवाह में बड़े-बड़े साम्राज्य बह गए... परंतु भारतीय स्त्रियों के ललाट में विधि की वज़्रलेखनी से अंकित अदृष्ट लिपि नहीं धुल सकी'

(वर्मा, 2001)। अनामिका इसी अदृष्ट लिपि को मिटाने की कोशिश अपनी कविताओं में करती हैं।

'तुलसी का झोला' कविता में अनामिका तुलसीदास को सीधे कठघरे में खड़ा करती हैं वह स्त्री जो सदियों तक इंतजार करती रही कि कोई आएगा और उसे 'गूदड़ के टाके' खोलकर मुक्त करेगा। यह कविता पितृसत्तात्मक धार्मिक साहित्य के उस दोहरे मानदंड पर कटाक्ष करती है जो स्त्री को बंधन में रखने की वैचारिक नींव प्रदान करता है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में स्त्री के बारे में जो पंक्तियाँ लिखीं, उन्हें अनामिका न तो विस्मृत करती हैं और न क्षमा वे काव्यिक प्रतिरोध का एक नया पाठ रचती हैं।

स्त्री की अस्मिता के प्रश्न पर महादेवी वर्मा, प्रभा खेतान और मृणाल पांडे तीनों का मत एक ही है: स्त्री को पुरुष की प्रतिलिपि नहीं बनना है, बल्कि अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करनी है (पांडे, 2011)। अनामिका की कविताएँ भी यही कहती हैं। 'स्त्रीत्व का मानचित्र' में वे लिखती हैं: 'मत करो मेरा विश्लेषण मेरी त्वचा की रंगत का / शारीरिक सौष्ठव का / दैहिक सौंदर्य से परे / प्रतिभा भी हूँ /क्षमता भी हूँ/हाँ! स्त्री हूँ मैं!!!!' यह पंक्तियाँ स्त्री अस्मिता का एक नया घोषणापत्र हैं।

मृणाल पांडे ने स्पष्ट किया है कि 'नारीवाद पुरुषों का नहीं, उनकी मानवीयता घटाने वाले उस छद्म मुखौटे का प्रतिकार करता रहा है जो मर्दानगी के नाम पर गढ़ा गया है' (पांडे, 2011)। अनामिका की कविता भी इसी भावना से अनुप्राणित है, वे पुरुष विरोधी नहीं, पितृसत्तात्मक व्यवस्था विरोधी हैं। अनामिका की सबसे महत्वपूर्ण और मौलिक काव्य-उपलब्धि है मिथकीय स्त्री-पात्रों का पुनर्पाठ। वे सीता, द्रौपदी, अहल्या, उर्मिला, मंदोदरी जैसे पात्रों को नई दृष्टि से देखती हैं और उन्हें नई ऐतिहासिक चेतना प्रदान करती हैं। यह पुनर्पाठ एड्रियन रिच के ' रि-विजन ' किसी पुराने पाठ को नई दृष्टि से पुनः देखने के सिद्धांत के अनुरूप है। 'टोकरी में दिगंत: थेरीगाथा' (2014) इस संदर्भ में अनामिका की सर्वाधिक महत्त्वाकांक्षी रचना है। थेरीगाथा बौद्ध काल की उन भिक्षुणियों की काव्यात्मक अभिव्यक्ति है जिन्होंने घर परिवार छोड़कर

मुक्ति की राह चुनी। अनामिका इन थेरियों को आधुनिक संदर्भ में पुनर्स्थापित करती हैं। जो थेरी कहती थीं 'मैं कुशलतापूर्वक धान कूटती हूँ', वह आज की वह स्त्री है जो अपने श्रम में सम्मान देखती है, किसी के आगे झुकती नहीं।

उर्मिला का पात्र, जो रामायण में नेपथ्य में ही रहता है, अनामिका की कविता में केंद्र में आ जाता है। वह उर्मिला जो चौदह वर्ष तक लक्ष्मण की प्रतीक्षा में अकेली रही, अनामिका उसकी प्रतीक्षा को निष्क्रिय स्वीकृति नहीं, बल्कि सक्रिय आत्मनिर्माण के रूप में चित्रित करती हैं। यह पुनर्पाठ स्त्री की 'चुप्पी' को नई अर्थवत्ता देता है। घरेलू स्त्री भी अनामिका की कविता में एक नायिका है, वह जो रोटी बेलती है, चुल्हा फूँकती है, बच्चों को पालती है, वह केवल 'गृहिणी' नहीं, एक सृजनकर्ता है।

भाषा, प्रतीक और शिल्प का विश्लेषण

अनामिका की काव्य भाषा उनकी सबसे बड़ी शक्ति है। वे संस्कृत की तत्सम शब्दावली, हिंदी के देशज शब्दों, लोक भाषाओं के प्रयोगों और अंग्रेजी के कुछ पारिभाषिक शब्दों को एक अनोखी बुनावट में पिरोती हैं। यह बहुभाषिकता उनकी कविता को एक विशेष ऊर्जा और बहुआयामी अर्थ को विस्तार प्रदान करती है। नामवर सिंह ने इसे 'भाषाई लोकतंत्र' कहा है (सिंह, 2002)। प्रतीकों के स्तर पर अनामिका प्रकृति, रसोई, देह, वस्त्र, गहने, खेती आदि को स्त्री अनुभव के प्रतीक बनाती हैं। 'बीजाक्षर' का बिंब अत्यंत सशक्त है, बीज जो धरती में पड़ा रहता है, छुपा रहता है, किंतु समय आने पर अंकुरित होता है, यह स्त्री की दबी हुई शक्ति और उसके उभरने का प्रतीक है। 'अक्षर' का अर्थ है जो नष्ट न हो, स्त्री का बीज रूप ऐसा ही अक्षर है, अविनाशी। शिल्प के स्तर पर अनामिका मुक्त छंद का प्रयोग करती हैं, किंतु उनकी कविता में लय का एक नैसर्गिक प्रवाह है जो पारंपरिक गीत परंपरा से आता है। उनकी कविताओं में प्रश्न वाचक और विस्मयादिबोधक वाक्यों का प्रयोग एक विशेष वक्रता उत्पन्न करता है। जूडिथ बटलर (1990) ने लिंग को एक निष्पादन माना है अनामिका की कविता इस ' निष्पादन' को उघाड़ती है और स्त्री को उसकी नैसर्गिक स्वतंत्रता में प्रतिष्ठित करती है।

व्यंग्य और हास्य भी अनामिका के शिल्प के महत्वपूर्ण तत्व हैं। 'ट्रस्ट' कविता में वे व्यंग्यात्मक ढंग से पूछती हैं कि स्त्री का 'ट्रस्ट' बनाया जाए तो उसमें क्या क्या रखा जाए और फिर उन सभी चीजों की एक लंबी सूची देती हैं जो समाज ने स्त्री से छीनी हैं। यह व्यंग्य सीधे आक्रमण से अधिक प्रभावशाली है।

समकालीन संदर्भों में अनामिका की प्रासंगिकता

21वीं सदी के दूसरे दशक में जब भारत में मी टू आंदोलन की लहर आई, जब निर्भया बलात्कार कांड (2012) ने पूरे देश को झकझोर दिया, जब 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' जैसी सरकारी नीतियाँ बनाई गईं, इन सभी संदर्भों में अनामिका की कविताएँ एक महत्वपूर्ण साहित्यिक आवाज बनकर उभरीं। उनकी कविता 'चौदह बरस की दो सेक्स वर्कर्स' या 'वृद्धाये धरती का नमक' जैसी रचनाएँ समाज के हाशिए पर खड़ी स्त्रियों को काव्यिक गरिमा प्रदान करती हैं।

डिजिटलीकरण के युग में जहाँ सोशल मीडिया पर स्त्री-विरोधी हिंसा एक नई समस्या बनकर उभरी है, वहाँ अनामिका की 'स्त्रीत्व का मानचित्र' जैसी आलोचनात्मक कृतियाँ और भी जरूरी हो गई हैं। रेखा कस्तवार ने ठीक कहा है कि 'स्त्री-विमर्श का प्रमुख सरोकार स्त्री का अपने पक्ष में खुद लड़ना, खुद खड़े होना रहना है' (कस्तवार, 2013) और अनामिका की कविता यही करती है।

वातावरण बदलाव के संदर्भ में भी अनामिका की प्रासंगिकता उल्लेखनीय है। उनकी कविताओं में प्रकृति और स्त्री का गहरा तादात्म्य है, जैसे वंदना शिवा का इकोफेमिनिज्म स्त्री और पर्यावरण के शोषण को एक ही पितृसत्तात्मक व्यवस्था का परिणाम मानता है (शिवा, 1988), वैसे ही अनामिका की कविताओं में स्त्री की मुक्ति और प्रकृति की मुक्ति अविभाज्य रूप से जुड़ी हुई है।

कात्यायनी के अनुसार 'स्त्री-विमर्श अपने समय और समाज के जीवन की वास्तविकताओं तथा संभावनाओं को तलाश करने वाली दृष्टि है' (हंस, 2000)। अनामिका की कविता इसी दृष्टि का साहित्यिक अवतार है।

ISSN 2349-5634 (Print) ISSN 2455-0973 (online)

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध से यह स्पष्ट होता है कि अनामिका की कविताएँ समकालीन हिंदी साहित्य में स्त्री-विमर्श की सर्वाधिक परिपक्व, बहुआयामी और प्रभावशाली अभिव्यक्ति हैं। वे न केवल पितृसत्तात्मक संरचनाओं का प्रतिरोध करती हैं, बल्कि एक वैकल्पिक सांस्कृतिक दृष्टि भी प्रस्तुत करती हैं,जहाँ स्त्री का श्रम, उसका शरीर, उसकी भावनाएँ और उसकी बौद्धिकता सभी को समान सम्मान मिलता है।

अनामिका की कविता में लोक-जीवन की स्त्री, मिथकीय स्त्री, बौद्ध थेरी, आधुनिक कामकाजी महिला और घरेलू माँ–सभी एक साथ उपस्थित हैं और एक-दूसरे को समृद्ध करती हैं। यह काव्यात्मक समावेशिता ही उनकी सबसे बड़ी उपलब्धि है। रोहिणी अग्रवाल ने जो कहा कि 'विमर्श का अर्थ है जीवंत बहस' (अग्रवाल, 2014) वह अनामिका की कविता पर पूरी तरह लागू होता है।

आज के दौर में जब स्त्री के विरुद्ध हिंसा, असमानता और सांस्कृतिक दमन नए रूपों में सामने आ रहे हैं, अनामिका की कविताएँ न केवल साहित्यिक, बल्कि सामाजिक रूप से भी प्रासंगिक हैं। वे एक ऐसे भविष्य का सपना देखती हैं जहाँ स्त्री और पुरुष दोनों अपनी पूर्ण मानवीय क्षमताओं में जी सकें न कि सामाजिक रूप से थोपी गई भूमिकाओं में। इस अर्थ में अनामिका की कविता केवल स्त्री विमर्श नहीं, मानव-विमर्श है।

संदर्भ सूची

अग्रवाल, रोहिणी (2014). साहित्य की जमीन और स्त्री मन के उच्छ्वास. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

अनामिका (1995). गलत पते की चिट्ठी. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

अनामिका (1997). बीजाक्षर. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

अनामिका (2003). दस द्वारे का पिंजरा. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

अनामिका (2006). खुरदरी हथेलियाँ. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

अनामिका (2008). दूब धान. भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।

अनामिका (2014). टोकरी में दिगंत: थेरीगाथा. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

अनामिका (2018). पानी को सब याद था. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

अनामिका (n.d.). स्त्रीत्व का मानचित्र. सामयिक प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली।

कस्तवार, रेखा (2013). स्त्री-चिंतन की चुनौतियाँ. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

काहार, लालचंद (2016). स्त्री-विमर्श और भारतीय हिंदी साहित्य. जर्नल ऑफ़ इमर्जिंग टेक्नोलॉजी एंड इन्नोवेटिव रिसर्च, 3(11), 835-839।

खेतान, प्रभा (1994). स्त्री उपेक्षिता (सिमोन द बोउवार कृत 'द सेकंड सेक्स' का अनुवाद). हिंदी पॉकेट बुक्स, नई दिल्ली।

खेतान, प्रभा (1996, अक्टूबर). हंस पत्रिका. (स. राजेंद्र यादव), अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 76।

खेतान, प्रभा (2003). उपनिवेश में स्त्री. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

ठाकुर, आरती सिंह (2024). समकालीन महिला कथाकारों के कथा साहित्य में 'स्त्री-विमर्श'. जर्नल ऑफ़ इमर्जिंग टेक्नोलॉजी एंड इन्नोवेटिव रिसर्च, 11(12), 296-301।

दुबे, अभयकुमार (2014). आधुनिकता के आईने में दलित. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

द्विवेदी, हज़ारी प्रसाद (1952). हिंदी साहित्य का उद्भव और विकास. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

पांडे, मृणाल (2011). परिधि पर स्त्री. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

पुष्पा, मैत्रेयी (1996, अक्टूबर). हंस पत्रिका. (स. राजेंद्र यादव), अक्षर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ. 75।

मालती, के.एम. (2012). स्त्री-विमर्श–भारतीय परिप्रेक्ष्य. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

वर्मा, महादेवी (1942/2001). शृंखला की कड़ियाँ. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।

वर्मा, महादेवी (1995). आधुनिक नारी–उसकी स्थिति पर एक दृष्टि. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।

रजक, रामचंद्र (2017). स्त्री-विमर्श की अवधारणा. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मल्टीडिसीप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, 4(4), 248-252।

राजक्यूमार (n.d.). स्त्री संघर्ष का इतिहास. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।

सिंह, नामवर (2002). कविता के नए प्रतिमान. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।

Butler, J. (1990). Gender Trouble: Feminism and the Subversion of Identity. Routledge, New York.

De Beauvoir, S. (1949). The Second Sex. Gallimard, Paris. [English trans. by H.M. Parshley, 1953, Jonathan Cape, London.]

Gilbert, S.M., & Gubar, S. (1979). The Madwoman in the Attic: The Woman Writer and the Nineteenth-Century Literary Imagination. Yale University Press, New Haven.

Rich, A. (1972). When We Dead Awaken: Writing as Re-Vision. College English, 34(1), 18-30.

Shiva, V. (1988). Staying Alive: Women, Ecology and Development. Zed Books, London.

Showalter, E. (1977). A Literature of Their Own: British Women Novelists from Brontë to Lessing. Princeton University Press, Princeton.